रूपरेखा

“तबले के लखनऊ और बनारस घराने की वादन शैली का तुलनात्मक अध्ययन”

दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड युनिवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा से संगीत में पीएच0डी0 उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध–प्रबंध की
रूपरेखा –2014

निर्देशिका:

प्रो0 (श्रीमती) सुभद्रा कुमारी सतसंगी
संगीत विभाग(विभागाध्यक्षा)

शोधार्थिनी

ज्योति सिंह
(संगीत विभाग)

प्रो0 उर्मिला आनन्द
कला संकाय प्रमुख
कला संकाय
दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा – 282005

''तबले के लखनऊ और बनारस घराने की वादन शैली का तुलनात्मक अध्ययन''

भूमिका –

''गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते।''

अर्थात् – गायन, वादन तथा नृत्य तीनों का त्रिवेणी संगम ही संगीत हैं।

भारतीय संगीत के दो आधार भूत तत्त्व है – स्वर और लय। संगीत में स्वर व लय दोनों ही अपने–अपने स्थान पर महत्वपूर्ण हैं। इसलिए संगीत के विद्वानों ने इसके महत्त्व को इस प्रकार वर्णित किया है –

'' श्रुतिः माता लयः पिता।''

अर्थात् – संगीत रूपी बालक की माँ श्रुति तथा लय पिता के समान हैं।

संगीत में लय वह शक्ति है, जो स्वर को सप्राण अथवा शक्तिसंपन्न रखती है। संगीत में 'लय' एक महत्वपूर्ण तत्व है। लय के ऊपर ही संगीत रूपी भवन की आधारशिला अवलम्बित है। संगीत को पूर्णता एवं स्थायित्व प्रदान करने के लिए लय तत्व का संयोग आवश्यक हैं। नियमित गति लय कहलाती है। 'लय' शब्द के कई अर्थ हैं। जैसे – तद्‌रूप होना, तादात्मय प्रदान करना।

संगीत में लय को प्रदर्शित करने का माध्यम 'ताल' है। भारतीय संगीत ताल प्रधान संगीत है। ताल के द्वारा ही संगीत में विभिन्न सौन्दर्यपूर्ण चलन व शैलियों का विकास होता है। जहाँ एक ओर ताल संगीत को लयात्मक आधार प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर श्रोताओं के मन को आल्हादित कर उन्हें आनन्द प्रदान करती है।

ताल ही संगीत को एक निश्चित नियम व समय के बंधन में बाँधती हैं। ताल का मुख्य कार्य किसी भी रचना में कमबद्धता लाना है। ताल के प्रयोग से ही संगीत में अनुशासन परिलक्षित होता है। जिस प्रकार सृष्टि की प्रत्येक वस्तु में प्राण तत्व के रूप में लय विद्यमान हैं, उसी प्रकार संगीत में प्राण के रूप में लय और ताल विद्यमान हैं। ताल का प्रदर्शन घन व अवनद्ध वाद्य के माध्यम से किया जाता है।

भारतीय संगीत में अवनद्ध वाद्यो की श्रेणी के अन्तर्गत तबला वाद्य का स्थान 'सर्वोपरि 'है। संगीत के क्षेत्र में तबले का 'स्वतन्त्र वादन' और 'संगत' दोनों ही रूप में प्रयोग होता है। उत्तर भारतीय संगीत में 'तबला' सर्वाधिक लोकप्रिय ताल वाद्य है। उत्तर मध्यकाल में प्रचार में आया 'तबला' वर्तमान में अत्यधिक प्रसिद्ध

ताल वाद्य है। तबला शास्त्रीय संगीत व उपशास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त वर्तमान में सुगम संगीत, चित्रपट, संगीत, लोक संगीत, फिल्मी संगीत की संगति हेतु अर्थात् संगीत की प्रत्येक विधा के साथ तबला वाद्य का अत्यधिक उपयोग किया जा रहा है। अतः वर्तमान में तबला साहित्य विश्व के किसी भी ताल वाद्य साहित्य की अपेक्षा विशाल व समृद्ध है।

संगीत में प्राचीन काल से ही गुरू –शिष्य परम्परा का प्रचार रहा है। प्राचीन समय में बंदिशों को लिखित रूप में रखने का कोई साधन नही था। तब गुरू अपनी कला का पूर्ण ज्ञान अपने पुत्रों तथा शिष्यों को देते थे, जिससे उनकी कला जीवित रह सके। इस प्रकार यह कम पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता था जो अंततः घरानों के रूप में विकसित हुआ।

तबला वादन में प्रत्येक घराना एक विशिष्ट एवं भिन्न शैली का सूचक होता है। अनुकरण की प्रवृत्ति से ही प्रत्येक घराने का अस्तित्व कायम होता है। इस प्रवृत्ति के कारण वर्तमान में जो भी शैलीगत विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं, उसी के अनुरूप प्रत्येक घराने की पहचान स्पष्ट होती है।

तबला वादन में छः घरानों का विशिष्ट स्थान है। इन छः घरानों को विस्तृत संदर्भ में स्थूल रूप से दो 'शैलियों'' के अनुसार विभक्त किया गया है, जिन्हें कमशः 'बाज' की संज्ञा दी गयी है। पूरब बाज व पश्चिम बाज।

तबला वादन में पश्चिम बाज में कमशः दिल्ली व अजराड़ा घरानों को रखा गया है। जबकि पूरब बाज में लखनऊ, फर्रूखाबाद व बनारस घराने हैं। पंजाब घराने का अपना अलग स्वतंत्र अस्तित्व है। –

तबला वाद्य की छात्रा होने के कारण तबला वादन शैली की विशेषताओं के प्रति जिज्ञासा होना स्वाभाविक ही था। अतःशोधार्थी का उद्देश्य इस क्षेत्र में गहन अध्ययन व शोध कार्य करके तत्संबंधी जिज्ञासाओं को शांत करना था। यथा –

(1) सभी घरानों की वादन शैली में क्या अंतर है?

(2) पूरब बाज अथवा पश्चिम बाज के घरानों में क्या एकरूपता है ? जिस कारण उसे एक ही बाज में वर्गीकृत किया गया है ?

(3) दोनों बाजों में क्या वैभिन्न्य है?

(4) एक ही बाज के दो अलग – अलग घराने क्यों हैं?

अतः शोधार्थी ने तत्संबंधी शोध एवं साहित्य का विधिवत् सर्वेक्षण किया –

घराने का आधार और केन्द्र बिन्दु गुरू या उस्ताद होता है। गुरू द्वारा ही हम तबले के किसी भी घराने की सही –सही तालीम प्राप्त कर सकते है। शोधकर्त्री ने अधिक से अधिक शोध प्रबन्धों को पुस्तकों, लेखों तथा इंटरनेट पर अपने शोध विषय का अध्ययन किया है। उनमें कुछ विषयों का सार निष्कर्ष रूप में प्राप्त हो पाया है। जिसका विवरण शोधकर्त्री ने इस प्रकार दिया हैं।

(1) सन्–1996, 'शर्मा, डॉ0 नीलू–''तबला वादन की शिक्षण पद्धति (एक विवेचनात्मक अध्ययन)''

- तबला वाद्य का सामान्य परिचय दिया गया है। इसमें सर्वप्रथम तबले की उत्पत्ति, अविष्कार व तबले के विकास का वर्णन किया गया है।
- तबले के विकास में घरानों , शिक्षण–संस्थाओं ,संगीत सम्मेलनों ,दूरदर्शन–आकाशवाणी, विभिन्न संगीत प्रतियोगितायें, श्रृव्य कैसेट् , सेमिनार,, कार्यशालाओं की भूमिका अनिवार्य बतायी है।
- तबला वाद्य की शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, सुगम, चित्रपट संगीत में सहायक वाद्य के रूप में तबले की भूमिका बतायी है।
- तबले का स्थान स्वतंत्र वादन व संगत दोनों में आवश्यक बताया है। साथ ही तबला वाद्य के कलात्मक व सौन्दर्यपक्ष को दर्शाया गया है।
- घराना पद्धति में गुरू –शिष्य परम्परा को अनिवार्य बताया गया हैं।
- विद्यालयीन शिक्षा पद्धति में प्रारम्भिक तालीम जैसे–वाद्य का रखाव, बैठक, लय ज्ञान, दाँये तथा बाये हाथ का व्यवस्थित रखाव ,वर्ण ज्ञान, अभ्यास की विधि का सही ज्ञान आवश्यक बताया हैं।

(2) सन् 1997, भट्ट , 'डॉ0 नलिन सुन्दरम्' – ''तबला शिक्षण के माध्यम के रूप में कैसेट श्रृव्य उपकरण तैयार करना।''

- प्राचीन संगीत को सांस्कृतिक विरासत के रूप में व्यक्त किया है। जिससे मनुष्य का बौद्धिक विकास होता है।
- संगीत में प्रायोगिक पक्ष व शास्त्र पक्ष दोनों आवश्यक बताये गये है।
- गुरूमुखी ज्ञान को सरल स्वरलिपि में बाँधकर पुस्तक रूप में दिया गया है। जिसे बाद में विद्यालय शिक्षा से जोड़ा गया है।
- संगत के साथ – साथ स्वतंत्र तबला वादन का भी अपना अलग अस्तित्व बताया है।

- तबले की विभिन्न विस्तारशील बंदिशें जैसे – पेशकार , कायदा , रेला ,चक्रदार आदि का विस्तृत वर्णन करते हुए विभिन्न शब्दकोषों तथा विद्वानों द्वारा उनकी परिभाषा को देते हुए बंदिशों के स्वरूप को स्पष्ट किया है। साथ ही बंदिशों के कुछ उदाहरण भी दिये है।

शोधकर्त्री ने अधिक से अधिक शोध प्रबन्धों को पुस्तकों, लेखों तथा इंटरनेट पर अपने शोध विषय से सम्बधित कार्य को देखा तथा उनका अध्ययन किया है, जिसमें शोधकर्त्री ने गायन, वादन तथा नृत्य से सम्बन्धित शोध प्रबंधो को पड़ा। परन्तु कुछ विषयों का सार किसी भी प्रकार से प्राप्त न हो पाने के कारण उनका निष्कर्ष प्राप्त नहीं हो पाया है। अतः उन विषयों का संक्षेप में विवरण इस प्रकार दिया है।

- **वाद्य से सम्बन्धित शोध प्रंबध**

(1) **सन् 1984** में **'डॉ0 गीता पटेंल'** ने "**भारतीय संगीत में पंजाब का योगदान**" विषय पर शोध अध्ययन प्रस्तुत किया। जिसमें पंजाब घराने की विस्तृत चर्चा की गयी हैं। यह शोध प्रंबध विशेष रूप से तबले के पंजाब घराने तक सीमित है।

(2) सन् 2000 'डॉ0 पूनम सिंह' ने "लखनऊ घराने में तबला वादन की परम्परा का अध्ययन" पर अपना शोध कार्य प्रस्तुत किया है। जिसमें तबले के लखनऊ घराने की तबला वादन का संक्षेप में वर्णन करते हुए कत्थक के प्रभाव किस प्रकार लखनऊ घराने पर परिलक्षित होता है। इसका वर्णन भी प्रस्तुत शोध में किया गया है। यह शोधकार्य लखनऊ घराने तक ही सीमित है।

(3) सन् 2008 में 'डॉ0 श्वेता गौतम' ने "स्वतन्त्रोत्तर काल में "भारतीय शास्त्रीय वाद्यों के विभिन्न घराने एवं महिला कलाकारों के योगदान" विषय पर अपना शोध किया है। जिसमें स्वतन्त्रोत्तर काल में वाद्यों के विभिन्न घरानों का वर्णन करते हुए घरानों में महिला कलाकारों के योगदान को प्रदर्शित किया है। यह शोधकार्य विभिन्न घराने में महिलाओं के योगदान तक सीमित है।

(4) **सन्, 2008** में **'डॉ0शिवेन्द्रप्रताप त्रिपाठी'** ने **तबले के बनारस घराने की रचनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन** विषय पर अपना शोध कार्य किया। जिसमें उन्होंने तबले के बनारस घराने की रचनाओं जैसे – स्तुति, परन, उठान, कायदा ,चक्रदार , रेला आदि रचनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया। इन्होंने अपना शोध कार्य बनारस घराने तक ही सीमित रखा है।

(5) **सन् 2009 में डॉ0 प्रभाकरलाल श्रीवास्तव ने"तबले के बनारस एवं दिल्ली घराने की वादन शैली एवं विशिष्ट रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन"**विषय पर अपना शोध अध्ययन किया।अपने शोध प्रंबध में उन्होंने दिल्ली व बनारस घराने को विशेष रूप से लिया है।डॉ0 प्रभाकर लाल श्रीवास्तव ने तबले

के बनारस एवं दिल्ली घराने की वादन शैली को बताते हुए दोनों घराने की विशिष्ट रचनायें जैसे – उठान, कायदा, रेला, टुकड़े आदि का तुलनात्मक अध्ययन किया है। इन्होंने अपना शोध कार्य दिल्ली व बनारस घराने तक ही सीमित रखा हैं।

(6) **सन् 2009 में 'डॉ0 अनिल बियर' ने ''तबले की विस्तारशील बंदिशों का विश्लेषणात्मक अध्ययन। (पेशकार ,कायदा, रेला के विशेष संदर्भ में)''** विषय पर अपना शोध कार्य किया है। जिसमें पेशकार ,कायदा , और रेले का विस्तृत वर्णन करते हुए बंदिशों के उदाहरण प्रस्तुत किये है। जिसके आधार पर उनका विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। यह शोध कार्य पेशकार , कायदा, रेले के अध्ययन तक ही सीमित है।

(7) सन् 2009 में 'डॉ0 अरविन्द कुमार श्रीवास्तव' ने ''फर्रूखाबाद एवं बनारस घराने के सुप्रसिद्ध कलाकार प्रो0 लाल जी श्रीवास्तव : एक अध्ययन'' पर अपना शोध प्रन्बध पूर्ण किया है। जिसमें प्रो0 लाल जी श्रीवास्तव के व्यक्तित्व – कृतित्व अर्थात् उनसे सम्बन्धित समस्त जानकारी को बताया गया है, चूँकि वह फर्रूखाबाद एवं बनारस के सुप्रसिद्ध कलाकार थे। अतः प्रस्तुत शोध में फर्रूखाबाद व बनारस घराने का पूर्ण विवरण दिया गया है। प्रस्तुत शोध प्रो0 लाल जी श्रीवास्तव के अध्ययन तक ही सीमित है।

(8) सन् 2009 में 'डॉ0 अर्चना खैर' ने ''तबले के पूरब घराने की वादन शैलियों का तात्विक अन्तर और वर्तमान में उसका व्यवहारिक स्वरूप'' विषय पर शोध प्रबंध प्रस्तुत किया है। जिसमें पूरब में कौन कौन से घराने है। उनकी वादन शैलियों की तात्विक अन्तर को स्पष्ट करते हुए उसके व्यवहारिक रूप का वर्णन किया है। यह शोध कार्य पूरब घराने की वादन शैलियों के अध्ययन तक सीमित रहेगा।

(9) सन् 2009 में 'डॉ0 लीला ओमचेरी' ने ''घरानों का विश्लेषणात्मक अध्ययन'' विषय पर अपना शोध कार्य किया है। यह शोध कार्य तबले के विभिन्न घराने के अध्ययन तक ही सीमित है।

गयन व नृत्य से सम्बन्धित शोध प्रबंध

(1) सन् 1998, कुमार, डॉ0विनोद – ''शास्त्रीय संगीत की कलात्मक सुदृढ़ता की दृष्टि से प्रमुख शैक्षिक संस्थाओं में घरानेदार संगीतज्ञों की सार्थकता।''

(2) सन् 1999, मिश्रा ,डॉ0रमेश कुमार –''दिल्ली घराने की गायकी तथा उस घराने के गायक – वादकों का संगीत में योगदान।

(3) सन् 2001, शर्मा ,डॉ0सीमा – ''बंदिश का सिद्धान्त रचना, प्रक्रिया एवं परिवर्तित स्वरूप उत्तर

भारतीय शास्त्रीय तत् वाद्यों के विशिष्ट संदर्भ में (18 से 20 शताब्दी)।''

(4) सन् 2001, सिंह, डॉ0 प्रताप –''शास्त्रीय गायन की बंदिशों में स्वर एवं साहित्य का महत्व एक अध्ययन।''

(5) सन् 2001, घोष ,डॉ0 तृप्ती –''आगरा घराने के उस्ताद स्वर्गीय विलायत हुसैन खाँ का संगीतज्ञ जीवन तथा संगीत जगत को उनका योगदान।''

(6) सन् 2002, वैष्ण, डॉ0रश्मि – ''मेहर घराने और वाद्य संगीत के क्षेत्र में उसका योगदान।''

(7) सन् 2004, राणा, डॉ0 पूजा – ''हिन्दुस्तानी संगीत में मेवाती घराने का योगदान।''

(8) सन् 2006, पाल ,डॉ0 धर्म – ''वर्तमान संदर्भ में घराने की गायकी एवं प्रयुक्त बंदिशों का मूल्यांकन।''

(9) सन् 2006, भटट्नागर ,डॉ0 गुंजन – ''शास्त्रीय संगीत के संदर्भ में उत्तर प्रदेश के अल्प प्रचलित गायन के घरानों का विवेचनात्मक अध्ययन।''

(10) सन् 2007 दुबे, डॉ0 अभय –'' ग्वालियर घराने के प्रमुख वाग्गेयकारों की स्वरचित बंदिशों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।''

(11) सन् 2007 सिंह,डॉ0 माधुरी – ''कत्थक के लखनऊ घराने के प्रमुख नाटकों की काव्य रचनाओं का वस्तु और तथ्य का प्रयोगात्मक अध्ययन।''

विषय का प्रादुर्भाव– तबला वादन के पूरब बाज के अन्तर्गत लखनऊ और बनारस घराने का महत्वपूर्ण स्थान हैं। लखनऊ घराने की नीवं अस्ताद मोदू खाँ व बख्शू खाँ द्वारा रखी गयी तथा बनारस घराने की नीवं पण्डित रामसहाय जी द्वारा पड़ी। धार्मिक एवं सांगीतिक वातावरण का प्रभाव लखनऊ व बनारस घराने की तबला परम्परा पर स्पष्ट दिखाई देता है। अतः घरानो में बजने वाली बन्दिशें एवं उनकी वादन तकनीक अन्य घरानों की अपेक्षा पृथक विशेषताओं सुसंगठित है साथ ही वर्ण निकास की नादात्मक गुणवत्ता भी भिन्न हैं। शोधकर्त्री द्वारा जो भी शोध सर्वेक्षण किया गया है। इनमें से कुछ शोध गायन ,वादन, नृत्य से सम्बन्धित है। शोधकर्त्री ने जिन शोध प्रबंधों का सर्वेक्षण किया है। उनमें तबले से सम्बन्धित विभिन्न घरानों पर शोध

कार्य सम्पन्न हुआ हैं। चूँकि तबले के तबले के लखनऊ और बनारस घराने की वादन शैली को लेकर कोई शोध कार्य नहीं किया गया है। अतः शोधकर्त्री ने प्रस्तुत विषय पर कार्य करने का निश्चय किया –

समस्या कथन – ''तबले के लखनऊ और बनारस घराने की वादन शैली का तुलनात्मक अध्ययन''करना।

उद्देश्य

- ❖ तबले के लखनऊ घराने की विशेषाओं का अध्ययन करना।
- ❖ तबले के बनारस घराने की विशेषाओं का अध्ययन करना।
- ❖ तबले के लखनऊ और बनारस घराने की वादन शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिसीमांकन – प्रत्येक घरानों पर कार्य करना सम्भव नहीं है। समय, कार्य व स्त्रोतों की सीमा को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री केवल तबले के लखनऊ घराना और बनारस घराने पर कार्य करेगी। तबले के पूरब बाज में लखनऊ घराना और बनारस घराना एक –दूसरे के काफी समीप है। अतः शाधकर्त्री इन्हीं दो घरानों पर कार्य करेगी।

अध्ययन की विधि – यह अध्ययन निम्न विधि द्वारा किया जायेगा।

- ➢ विश्लेषणात्मक विधि
- ➢ साक्षात्कार विधि
- ➢ निरीक्षण विधि

स्त्रोत – यह अध्ययन उपलब्ध उपकरण जैसे– पुस्तकालय, टेप, डीविडी, नेट, साक्षात्कार , विविध मंच प्रदर्शनों, विभिन्न संगोष्ठियों आदि की सहायता से किया जायेगा।

अध्ययन की रूपरेखा

शोध प्राप्त साम्रगी को सुव्यवस्थित रूप प्रदान करने हेतु साम्रर्गी को निम्न अध्यायों में समायोजित किया जायेगा –

भूमिका

- ❖ तबले का सामान्य परिचय।

प्रथम अध्याय – तबला वादन के विभिन्न घरानों का अध्ययन।

- ❖ घराने का शाब्दिक अर्थ एवं रचना – कारण व महत्त्व।
- ❖ बाज व घराने में सम्बन्ध।
- ❖ तबला वादन में घराना परम्परा।
- ❖ पूरब व पश्चिम घरानों का परिचय।

द्वितीय अध्याय – तबला वादन में लखनऊ घराना ।

- ❖ शैली – गत विशेषताएँ।
- ❖ वंश परम्परा।
- ❖ प्रमुख कलाकारों का परिचय।

तृतीय अध्याय – तबला वादन में बनारस घराना।

- ❖ शैली – गत विशेषताएँ।
- ❖ वंश परम्परा।
- ❖ प्रमुख कलाकारों का परिचय।

चतुर्थ अध्याय –तबला के लखनऊ व बनारस घराने की प्रमुख बंदिशों का तुलनात्मक अध्ययन।

- ❖ लखनऊ घराने की विस्तारशील बंदिश।
- ❖ लखनऊ घराने की अविस्तारशील बंदिश।
- ❖ बनारस घराने की विस्तारशील बंदिश।
- ❖ बनारस घराने की अविस्तारशील बंदिश।

❖ दोनों घरानों की बंदिशों का तुलनात्मक अध्ययन।

पंचम अध्याय – तबला के लखनऊ व बनारस घराने की वादन शैली का तुलनात्मक अध्ययन।

❖ रखरखाव के आधार पर।

❖ निकास विधि के आधार पर।

षष्ठ अध्याय – उपसंहार।

उपयोगिता– तबले के बनारस व लखनऊ घराने की वादन शैली का अध्ययन करके दोनों घरानों को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। लखनऊ व बनारस घराने की वादन शैली, उनमें प्रयुक्त वर्णो की निकास विधि, बंदिशों के अध्ययन से प्रस्तुत किया जाएगा। जिनसे विद्यार्थियों, भावी शोधार्थियों एवं संगीत प्रेमियों विद्यार्थियों को उनकी विशिष्ट विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त कर उनकी सौन्दर्यानुभूति कर आनन्द प्राप्त करने के साथ उनकी समानताओं व विभिन्नताओं का ज्ञान भी प्राप्त हो सकेगा। प्रस्तुत शोध भावी शोधार्थियों हेतु इस प्रकार के अनेकों अध्ययन करने हेतु प्रेरणास्त्रोत भी रहेगा। यथा –

- लखनऊ घराने की वादन शैली की विस्तृत अध्ययन।
- बनारस घराने की वादन शैली की विस्तृत अध्ययन।
- लखनऊ घराने व बनारस की बंदिशों विस्तृत अध्ययन।
- अन्य घरानों के तुलनात्मक अध्ययन में भी सहायक रहेगा।

संदर्भ गंथ सूची

(1) सन् 1976, आचार्य बृहस्पति , संगीत चिन्तामणि, संगीत कार्यालय, हाथरस।

(2) सन् 1998, चौधरी, डॉ0 विमलकान्त राय ''भारतीय संगीत कोश'', वाणी प्रकाशन,दरियागंज नई दिल्ली।

(3) सन् 2000,मिस्त्री, डॉ0 आबान ई, ''तबला के घरानें एवं परम्परायें'' , पं0 केकी0 एस0 जिजिना, जम्बुलवाडी।

(4) सन् 2003 शुक्ल,डॉ0 योगमाला, ''तबले का उद्गम, विकास और वादन शैलियाँ , हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय नई दिल्ली।

(5) सन् 2006,मिश्र,पंडित छोटेलाल, ''ताल प्रबंध'' , कनिष्क पब्लिशर्स डिस्टीष्यूटर्स दरियागंज नई दिल्ली।

(6) सन् 2004,जोहरी, डॉ0 रेनू, ''भारतीय सांगीतिक जगत में वाराणसी का योगदान'', क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी , नई दिल्ली।

(7) सन् 2005,सेन,डॉ0 अरूण कुमार,,''भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन,'' मध्यप्रदेश, हिन्दी ग्रंन्थ अकादमी, भोपाल।

(8) सन् 2006,मिश्र, पंडित छोटेलाल, ''ताल प्रसून'' ,कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीष्यूटर्स दरियागंज नई दिल्ली।

(9) सन् 2007, पुरी, डॉ0 ''संगीत मीमांसा'', आर डी पाण्डेय, सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।

(10) सन् 2008, राव, डॉ0 सुदर्शन ''तबले के घराने, वादन शैलियाँ एवं बन्दिशें,कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीष्यूटर्स दरियागंज नई दिल्ली।